7. लवहरि–कुशहरि

लोकगाथा जातीय ओ जनपदीय जीवनजातक सभटा पक्ष ओ संदर्भकेँ गेयात्मक प्रस्तुतिमे समर्थ भेल अछि। दीना-भद्रीक दलित वर्गीय पक्ष हो अथवा लवहरि-कुशहरिक आभिजात्य वर्गीय परिवेश हो। लोकगाथा साहित्यमे जाति-उपजाति, ऊँच ओ नीच, राजन्य ओ जनसामान्य, सनातन ओ गैर सनातन वर्गक कोनो विभेद नहि, अपितु मानवीय दृष्टिकेँ सर्वोपरि राखि शाश्वत जीवन मूल्यक अवधारणाकेँ प्रमुखता देल गेल अछि। अर्थात् विभेदक बीच समन्वयात्मक चेष्टा कएल गेल देखना जाइत अछि। दलित गाथा सभमे संगठित प्रतिकारक भावनाकेँ सबल बनाओल गेल अछि। 'मीरायन'क गाथा नायक मीर सुलतान सूर्यभक्त कारिख पंजियारक ओ लालखां शिव भक्त गणीनाथक पराक्रमी पुत्र गोविंदक शरणागत होइत छथि।

मैथिलीक लोकगाथा साहित्यमे दलित वर्गक अपेक्षा आभिजात्य वर्गक नायकत्वमे अभिव्यंजित गाथाक संख्या कम अछि तथापि जतबे उपलब्ध अछि ओहिमे हुनक राजकीय ओ सामंती आभा बांचल अछि। लवहरि-कुशहरि, राजा धनपाल, रइया रणपाल, घुघली घटमा, गोपीचन, मरुअनि, लचिका रानी, सीता जम्मरि, रूकमिनि सम्मरि आदिमे अभिव्यंजित आभिजात्य संस्कृतिक आलोकमय चित्रण भेल अछि, मुदा दलितगाथा सभमे अभिजात्यवर्ग प्रतिकारक लक्ष्य सेहो बनल छल। आभिजात्य वैभव-विलास, स्वेच्छाचारिता, शोषण-उत्पीड़न, दासता, बेगार, डोला, बनिसार, दंड विधान, युद्धक आतंक आदिक वर्णन, भव्यताक संग भेल अछि, मुदा गामघरक लौकिक परिवेशमे। 'लवहरि-कुशहरि' आभिजात्य वर्गक गाथायी प्रतिनिधित्व करैत अछि।

आलोच्य गाथा रामकथाक उत्तरार्द्धक कथानक पर आधारित अछि एवं गाथाक संयुक्त नायक लव ओ कुश छथि, अतः डा. रामदेव झा 'लवहरि-कुशहरि'केँ पौराणिक वा अर्द्धपौराणिक गाथा कहने छथि (मैथिली लोक साहित्य : स्वरूप ओ सौंदर्य, लहेरियासराय–दरभंगा, 2002 ई., पृ. 30)। अहिसँ प्रमाणित होइत अछि जे रामकथा मिथिलांचलक जनजीवन धरि आत्मीय आ लोकानुरंजक बनि गेल छल। रामकथाक सबसँ मार्मिक प्रसंग अछि राजरानीसँ वनबासिन बनलि सीताक व्यथा कथा। लवहरि-कुशहरि वस्तुतः 'उत्तररामचरित' (भवभूति)क भावभूमिपर रचित गाथामे सीताक वनवास, बाल्मीकि आश्रममे लवकुशक जन्म, लालन-पालन, शिक्षा-दीक्षा, अश्वमेध यज्ञक घोड़ाकेँ पकड़ब, अवधक सेना ओ रामसँ युद्ध, ओ

सीताक पाताल प्रवेश धरिक कथा अभिव्यंजित अछि। आब प्रश्न उठैत अछि जे लोकजीवनमे श्रुति परम्परासँ लोक प्रचलित कथांशसँ प्रभावित ओ प्रेरित भऽ भवभूति 'उत्तरामचरित'क रचना कएलनि ? कियेकतँ वाल्मीकिसँ पूर्व रामकथा गायन ओ श्रुति परम्परामे लोक प्रचलित छल। काल निरूपणक दृष्टिसँ वाल्मीकि उद्‌भव दाथरथी रामक शताब्दियहु बाद भेल छल। लवहरि-कुशहरि लोक रामायणक अंतिम खंड थिक।

लवहरि कुशहरिक कथानक–लंकाविजयसँ घुरलाक बाद कौशल्या राम ओ सीताकेँ चुमौलनि। अयोध्या आनंदित भेल। हास-परिहासक क्रममे ननदि कुलामति सीतासँ रावणक लिखिया (चित्र) बनएबाक लेल बाध्य कऽ देलनि। सीता रावणक काल्पनिक चित्र बियनि पर बनौलनि। ई जनतब रामकेँ बहिन कुलमतिसँ ज्ञात भेलाक बाद लोकापवादक भयसँ सीताकेँ बनवास पठा देल गेलनि। ओ गर्भवती छलीह।

सीता महर्षि बाल्मीकि आश्रममे आश्रय लेलनि। ऋषि पत्नी ओ कन्या लोकनिक स्नेहिल साहचर्य पाबि एक दिन ओ एकटा दिव्य पुत्रक जन्म देलनि। देवलोक सावधान भेल। भैरव रक्षाक दायित्व लेलनि। एकदिन कुटीमे लवहरि (लव)केँ सुताकए ओ गंगा स्नान करए गेलीह। ऋषि लवहरिकेँ एकसर देखि उठाकऽ अपन कुटीमे लए गेलाह। एम्हर सीताक कुटीमे लवहरिकेँ नहि देखि चिंतित शिव सीताक भयसँ व्याकुल भऽ कुशक बालककेँ मंत्रशक्तिसँ जीवंत बना राखि देलनि। गंगा स्नानसँ सीताकेँ घुरलाक बाद ऋषि लवहरिकेँ आनि सीताकेँ सौंपि देलनि। ऋषि ओ सीता दूटा बालककेँ देखि विस्मित छलाह। शिवक सृष्टि जानि अहि बालकक नाम कुशहरि (कुश) राखल गेल। डा. विश्वेश्वर मिश्र (मैथिली लोकगाथा विवेचन, पटना, 2007 ई.पृ. 51-53) ऋषिक स्थानपर गुरु वशिष्ठक नामक उल्लेख कएने छथि, जे पूर्णतः गलत अछि। वशिष्ठ अयोध्या राजवंशक गुरू छलाह।

लव ओ कुशक शिक्षा-दीक्षा ऋषिकुलमे बाल्मीकिक देख-रेखमे होमए लागल। एकदिन दुनू भाइ सीताक आशीर्वाद पाबि वन आखेटक लेल आश्रमसँ बहरएलाह। लंकाविजयक बाद अश्वमेध यज्ञक आनुष्ठानिक घोड़ा छोड़ल गेल, जकरा लव ओ कुश पकड़ि कऽ आश्रमक खुट्टामे बान्हि देलनि। अयोध्यामे हाहाकर मचि गेल।

एकदिन ओ दुनू मातासँ आज्ञा पाबि राजकीय कमलदहमे फूल तोड़ए गेलाह। कमलदहक सभटा फूल तोड़ि कमलदहक रक्षक बछर (वत्सल वा वत्स)

नागक फण पर बोझि कुश आश्रम लऽ अनलनि। रामचन्द्र ई सब जानि सैन्य प्रमुख शाल ओ विशालकेँ कमलदह पठौलनि। एकटा गाछक छाहरि तर विश्राम करैत लवहरिकेँ बंदी बनाकऽ प्रताड़ित करैत अयोध्या आनि हुनका बनिसार (कारागार) दऽ देल गेल।

ई सब जानि कुशहरि धनुष वाणसँ सज्जित भऽ अयोध्या जुमि गेलाह। राजभवन माँटि देवालसँ आवेष्ठित छल। ओ अयोध्याक सात सय पनिभरनीक वस्त्रावरणकेँ अग्निवाणसँ डाहि देलनि। नग्न पनिभरनी सभ लजाकऽ कुसियारक खेतमे नुका गेलीह। एकटा बुढ़ियासँ लवहरिकेँ राजदंडक सूचना प्राप्त भेलनि। क्रुद्ध भऽ ओ राम आ अयोध्यावासीकेँ कुसियारक खेतमे बाघक शिकारक लेल संदेश पठौलनि। अयोध्यावासी खेतमे लाजे नुकाएल नग्न पनिभरनी सभकेँ देखि कुशहरि पर आक्रमण कऽ देलक। भीषण संघर्षमे अयोध्याक समस्त वीर योद्धा शाल-विशाल सहित मारल गेलाह।

अंततः राम अपन विश्वस्त हनुमानकेँ कुशहरिकेँ बंदी बनाकऽ अयोध्या आनबाक आदेश देलनि। दुनूमे भीषण युद्ध भेल। पश्चात् कुशहरिकेँ सीताक पुत्र जानि हनुमान हिनका दुलराबय लगलाह। हनुमानकेँ घुरबामे विलंब देखि स्वयं राम क्रोधांधमे कुशहरिपर प्रहार करए लगलाह जकर प्रबल प्रतिकार कुशहरि छप्पन छुरीसँ कऽ रामकेँ चकित कऽ देलक। परिचय पाबि ओ बात्सल्य भावसँ अभिभूत लवहरिकेँ बंदी मुक्त कऽ राम ओ लक्ष्मण लव ओ कुशक संग सीताकेँ सादर अयोध्या आनबाक हेतु आश्रम दिस विदा भेलाह। मुदा, सीता राम ओ लक्ष्मणकेँ आश्रम दिस अबैत देखि ओ धरतीमे समा गेलीह। आत्मग्लानिसँ मर्माहत राम सेहो सरयूमे डुबि अपन शरीर त्याग कएलनि।

'लवहरि-कुशहरि'क गाथामे 'बन्हनी' तँ नहि अछि, मुदा 'सुमिरन' (देवस्तुति)मे मैया जानकीसँ करबद्ध प्रार्थना कएल गेल अछि—"कलजोरि परिनाम करै छी मैया जानकी आबयौ।" गादी पर ने बैठल दादा सिरी नरायन आबयौ।।" अर्थात 'सुमिरन'मे अयोध्याक राजगादीपर बैसल राम ओ सीताकेँ करबद्ध स्मरण कएल गेल अछि। 'बन्हनी' ओ 'सुमिरन' सँ श्रोता लोकनिक मानसपटल पर एकटा आध्यात्मिक भावभूमि सृजित होइत अछि। डा. पूर्णानंद दासक अप्रकाशित शोध प्रबंध 'मैथिली लोककाव्य' (1962 ई.)मे गाथा संकलित अछि।

आलोच्य लोकगाथा तीन खंडमे वर्गीकृत अछि—1. अयोध्या खंड, 2. वन खंड आ 3. कमल खंड। अयोध्या खंडमे लंका विजयक उपरांत अयोध्याक राजकीय परिवेशमे प्रतिष्ठित राम-लक्ष्मण ओ सीता, भरत-शत्रुघ्न ओ बहिन

कुलमति, धोबि द्वारा लांछित सीताक कथा प्रसंग आ वनखंडमे लक्ष्मण द्वारा वन पठौनाय, लोकविवादसँ बचवाक लेल, मुनिक कुटी (ऋषिक आश्रम)मे लव ओ कुशक जन्म, शिक्षा-दीक्षा, अश्वमेध यज्ञक घोड़ा बालिकर्णकेँ पकड़ि लौनाय, अयोध्याक सेनाक संग लवकुशक युद्ध, शाल-विशाल, हनुमान ओ रामसँ युद्धमे लव ओ कुशक युद्ध कौशल, धनुर्विद्याक ज्ञान, आत्मबल ओ आत्मविश्वासक भरोस आ माता सीताक आशीषसँ हिनक गरिमा बढ़ि जाइत अछि। प्रकारांतरसँ ओ रघुकुलक भावी शासक छथि। तेसर खंड कमल खंडमे उत्तराखंडक राज रक्षित कमलदह (ह्रद)क पुष्पित कमलालयक रक्षाक दायित्व सम्हारैत वछर नाग लवकुशक आगां पराभूत। सेनापति शाल ओ विशाल द्वारा सुप्तावस्थामे लवहरि बंदी, राजदंडक तहत भीषण प्रताड़ना, दुनू पक्षमे भीषण युद्धक उपरांत दुनू वीर बालक परिचय पाबि राम बात्सल्य भावसँ अभिभूत भऽ जाइत छथि। अंतत: धरतीक बेटी सीता धरतीमे समा जाइत छथि आ राम सरयूमे जलसमाधि लऽ लैत छथि। एवं प्रकारे गाथा दुखांत अछि।

मिथिलाक प्राकृतिक पृष्ठभूमिक अनुकूल राजन्य परिवेशसँ एकदम भिन्न वन-पर्वतांचलमे अवस्थित ऋषि आश्रममे सीताक व्यथा कथाक कारूणिक छाहरिमे सीता चरितक उत्तरार्द्ध विकसित भेल अछि। अयोध्याक राजरानीकेँ वनवासिन स्वरूपोमे कुलीनत्व दमकैत अछि। कथानक मूलत: सीता अछि। सीता भारतीय जीवनमे भूतलसँ ऊपर धरि एकटा आदर्श नारीक रूपमे दीपित छथि। आधुनिक साहित्यसृजनमे 'रामायण' (वाल्मीकि)क समानान्तर 'सीतायन' (विधु)क रचना एकटा साहसिक डेग अछि। सीताक जीवनक उत्तरार्द्ध शारीरिक ओ मानसिक द्वंद्वसँ उद्वेलित अछि। मुदा राजेश्वरीसँ वनवासिन बनि धैर्यक संग त्याग, तपस्या ओ स्वाभिमानक रक्षा करैत प्रतिकूल परिस्थितियोमे अपन दिव्यत्वकेँ कनेको धूमिल नहि होमय देलनि, यैह वैशिष्ट्य 'लवहरि-कुशहरि'के अमर ओ कालजयी बनबैत अछि। अहिमे मिथिलाक नारीक ब्रह्मविद्याक दार्शनिक भावभूमिमे चारित्रिक विकास अद्‌भुत रूपेँ भेल अछि।

डा. ब्रजकिशोर वर्मा 'लवहरि-कुशहरि'क रोमांचक लोकगाथा पर आधारित मैथिलीमे उपन्यस्त 'लवहरि-कुशहरि' (कलकत्ता, 1974 ई.)क प्रस्तुति एकटा ऐतिहासिक घटना थिक। स्व संकलित अहि गाथाकेँ वैचारिक धरातल पर मंथन कऽ जे नवनीत प्राप्त कएलनि ओ सुधी पाठककेँ सुलभ करौलनि—1. लवहरि-कुशहरि स्वरूप ओ मौलिकता, 2. सहस्त्रमुख रावण वध : वनवास प्रसंग, 3. सीताक जीवनसंघर्ष, 4. सीतातत्व आ 5. अश्वमेध यज्ञक अश्व कोना भेटलै?

'मिथिला मिहिर' (पटना)मे प्रकाशित अहि निबंध सभमे (1973 ई.) गाथाक तात्विक विवेचन भेल अछि।

लवहरि कुशहरिक तीनटा कंठ प्रति डा. मणिपद्मकेँ प्राप्त भेल छलनि जाहिमे मलाही-मकरंदा गामक मलाहसँ प्राप्त कंठ प्रति सर्वांग सुंदर ओ व्यवस्थित अछि। गाथा तीन खंडमे विन्यस्त अछि—अयोध्याखंड, वनखंड ओ कमलखंड। ओ सर्वथा मौलिक रूपेँ विन्यस्त अछि। दोसर कंठप्रतिमे बाल्मीकि आश्रममे शिक्षित सुगी कथावृत्तक संवाहिका बनल अछि आ तेसरमे 'सीता-सपन' अबैत अछि। ओ सभटा कंठ प्रति गाथा गायककेँ सपनौती विधिसँ प्राप्त भेल छलनि। मुदा सभठाम रामक अपेक्षा सीताक उत्तर जीवनवृत्त प्रमुख अछि। सभक प्रस्थान बिन्दु अयोध्या अछि, जाहिठामसँ ओ वनवास पठाओल जाइत छथि आ समापन सीताक धरती प्रवेशसँ होइत अछि। लवहरि कुशहरिक सम्पूर्ण गाथामे ओ विदेही बनल छथि अर्थात् देह रहित दार्शनिक भावभूमिमे आ कामिय जीवनकेँ जीवैत। समस्त कथाक आलंबन सीते छथि। जनकनंदिनी जानकी नहि, राजराजेश्वरी गाथामे सनातन चिंतनक वैष्णव, शैव ओ शाक्तक समन्वित धारा अंत: सलिला जकां प्रवाहित अछि।

रामायण कथामे सीताक व्यक्तित्व तीन ठाम उद्भासित अछि—1. राम ओ लक्ष्मणक संग वनवासक काल, 2. रावणक अशोक वाटिकामे आ 3. सतीत्वक अग्नि परीक्षा दैत। अंतत: सीता चरितक विकास शाक्त रंगमे उर्ज्वसित भऽ जाइत अछि। मुदा सीताक आंतरिक स्वरूपमे एकरूपता निर्विवाद रूपमे स्पष्ट अदि। आलोच्य लोकगाथामे मिथिलाक स्वर्णिम साधनापरंपरा, लोकजीवनक ग्राम्य सौंदर्य आ सृजनात्मक प्रवृत्ति आलोकित अछि (मैथिली लोकगाथाक इतिहास, पृ. 205)। सीतासँ जीवन क्षेत्रमे कर्मक सिरौरसँ बनल ऐश्वर्यमय जीवनी शक्ति आ मातृत्वक संदर्भमे माताक दूधसँ जीवनीशक्ति, नोरसँ प्रेम, करूणा आ वात्सल्यपूर्ण वाणीसँ संतति ज्योतित भऽ जीवन संग्राममे सतत विजयी वनवाक क्षमता प्राप्त करैत अछि, यैह सीता तत्व थिक। अत: सीता तत्वक साधना भूमि बनल त्रिवेणी संगमतटक बाल्मीकि आश्रम, जाहिठाम गुप्तकालसँ पालयुग धरिक, स्थापत्य आ वैष्णवधर्मी मूर्तिसभ सँ प्रमाणित अछि।

महंथ धनराजपुरी ओहि बाल्मीकि आश्रमकेँ शिकारक क्रमे भैंसालोटन (पश्चिम चंपारण)क त्रिवेणी संगममे अवस्थित वन-प्रांतरमे नुकाएल सांस्कृतिक द्वीपक रूपमे खोजि निकाललनि। हुनक शोधालेख 'महर्षि वाल्मीकि आश्रम कहाँ था ?' आ 'वाल्मीकि आश्रम: वाल्मीकि नगर'मे ओ स्थल प्रमाणित अछि। नेपाल

ओ भारतक सीमांत क्षेत्रमे अवस्थित ओहि 'बाल्मीकि आश्रम : बाल्मीकि नगर'क राजकीय मान्यता नेपाल नरेश महेन्द्र वीर विक्रम शाह देव ओ भारतक प्रधानमंत्री देने छथि (परम्पराकेँ कीर्तिस्तम्भ, सं० डा० सतीशराय, किताब पब्लिकेशंस, मुजफ्फरपुर, 2009 ई., पृ. 109)। ऋषि-मुनि लोकनि तँ भ्रमणशील होइत छलाह। अत: हुनक आश्रम आनो ठाम श्रुत अछि। मुदा प० चंपारणक बाल्मीकि आश्रम सहो एकटा अभिप्रमाणित अछि।

'सीताचरित की उत्तरगाथा :–'लवहरि-कुशहरि' (धर्मायण, पटना)मे हम लिखने छलहुँ–अयोध्याक राजमहल सरयू नदीक किछेरमे माटिक प्राचीरसँ आवृत्त छल अर्थात् पजेवाक देवालसँ नहि। लव-कुश कमल फूल सभक विनिमय लौह धातुसँ कएलनि, जाहिसँ ओ 'छप्पन छुरि' बनाए (नाना प्रकारक आयुध –तीर, भाला, बरछा आदि) शस्त्रास्त्रक अभ्यास ओ प्रयोगक लेल बनवौलनि। मंत्रसिक्त 'अगिनवान'क प्रयोग होइत छल। अश्वमेध यज्ञक घोड़ाक नाम 'वालिकर्ण' आ राजकीय कमल पोखरिक नाग रक्षाक नाम 'बछर नाग' छल। कुसियारक खेतमे शिकार, राजकीय बनिसारमे लवहरिकेँ प्रताड़ना, सीताक धरती प्रवेश आदि चिंतनीय विचार बिन्दु थिक जे 'लवहरि-कुशहरि'क गाथाकेँ विशिष्ट बनबैत अछि। ओ रामकथाक परंपरामे स्वप्निल दृश्यावलीसँ स्वत: स्फूर्त ओ सृजित लोककाव्य थिक कोनो सृजित रामकथाक रूपांतर नहि। डा. मणिपद्मक अनुसार आलोच्य लोकगाथामे सीताक व्यक्तित्व प्रधान ओ रामक गौण अछि। रामायण 'कथा रामकेन्द्रित अछि मुदा लवहरि-कुशहरि'क कथा सीताकेन्द्रित अछि।

रामकथामे वर्णित वशिष्ठ अयोध्याक इक्ष्वाकु कुलीन राजवंशक राजगुरू आ बाल्मीकि सीताकुलक दीक्षा गुरू छथि, मुदा दुनूमे राजवंशक शौर्य परंपराक सतत उर्ज्वसित बनल रहबाक चिंता समान रूपसँ देखना जाइत अछि। लोकगाथामे लव ओ कुशकेँ जुड़वा पुत्र सेहो कहल गेल अछि, जे आइयो वैज्ञानिक युगमे संभव अछि। पाश्चात्य संस्कृतिमे साहित्यक संदर्भ सागर, अरबी-फारसी साहित्यमे मरूभूमिक जे महत्वपूर्ण पृष्ठभूमि बनैत अछि, ओकरहि समानांतर भारतीय ओ जनपदीय साहित्य ओ संस्कृतिमे आरण्यक (वन प्रांतर)क बनैत अछि। लवहरि-कुशहरिक लोकागाथामे आरण्यक संस्कृतिक साक्षात् होइत अछि।

अंतत: ई निसंकोच स्वीकार्य अछि जे लवहरि-कुशहरि'क मैथिली लोकगाथा 'सांस्कृतिक मिथिलांचल'क पृष्ठभूमिमे सृजित ओ विशिष्ट गाथायी साहित्य अछि, जाहिमे आभिजात्य वर्गक संस्कृति जनपदीय स्वरूपमे गठित भेल अछि। मिथिला लोकचित्र कला शैलीमे राम ओ सीताक प्रसंग चित्रक एकटा कलात्मक सृजन माला परंपरित अछि।